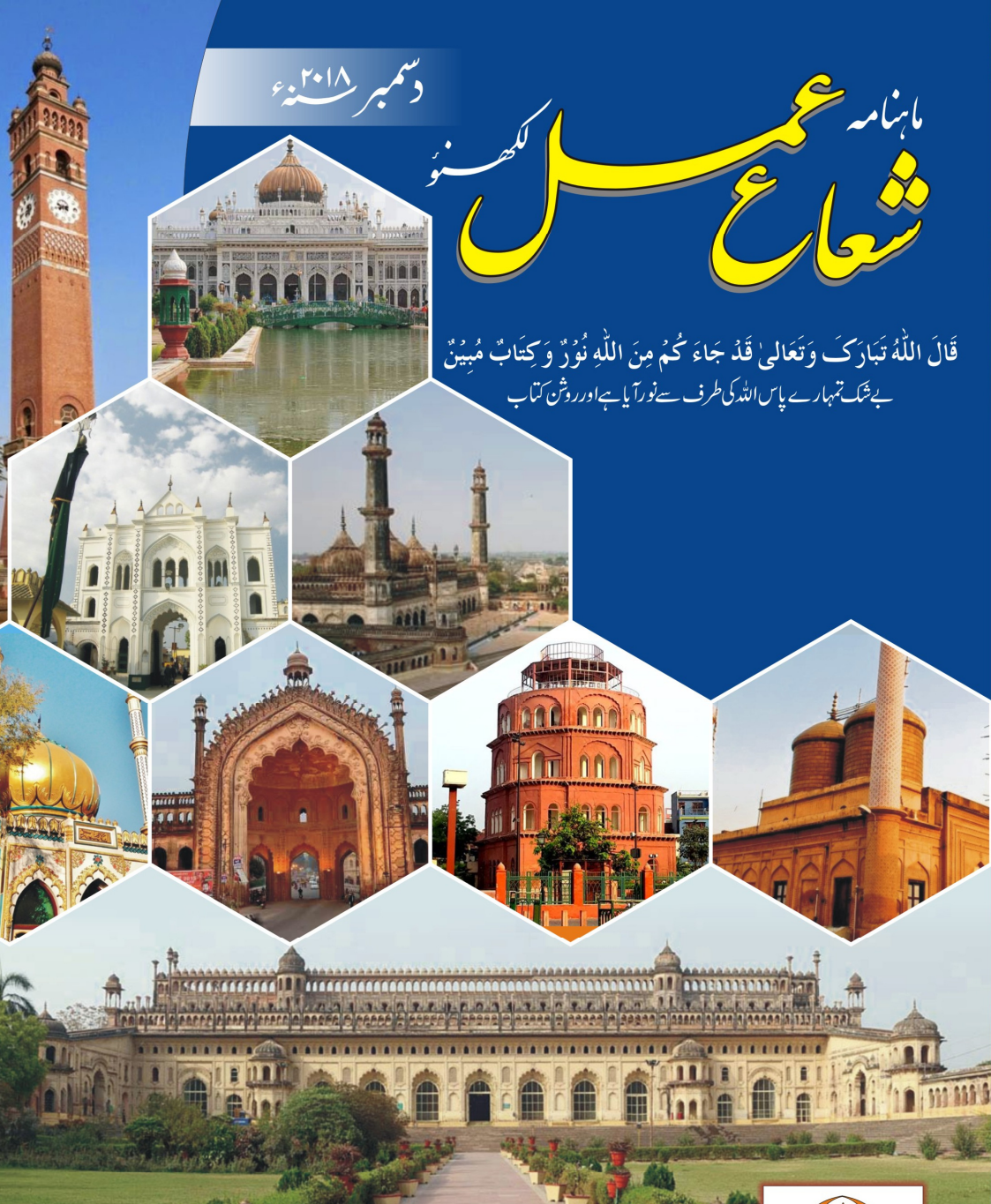


دسمبر ۲۰۱۸ء

ماہنامہ شمع لکھنؤ

قَالَ اللَّهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى قَدْ جَاءَكُمْ مِنَ اللَّهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُبِينٌ
بے شک تمہارے پاس اللہ کی طرف سے نور آیا ہے اور روشن کتاب



نور ہدایت فاؤنڈیشن، حبیبیہ غفران آباد، مولانا کلب حسین روڈ، چوک، لکھنؤ-۳



ISSN: 2456-8384

Vol: 15, Issue-6

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526

Pages: 76

Postal Regd. No. SSP/LW/NP-75/2017-19

Dispatch Date: 2 & 6 of Every Month

Annual Subscription Rs. 200/-

December - 2018

Per Copy Rs. 25/-

SHUA-E-AMAL

Lucknow

शुआ-ए-अमल

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका लखनऊ



صدر العلماء آیۃ اللہ سید باقر نقوی ابن ممتاز العلماء آیۃ اللہ سید ابوالحسن نقوی

ولادت: بمقام لکھنؤ، ۱۳۵۷ھ مطابق ۱۹۳۸ء



NOOR-E- HIDAYAT FOUNDATION

Imambara Ghufuran Maab, Maulana Kalbe Husain Road, Chowk, Lucknow-3 (U.P.) INDIA, Phone : 225223

Per Copy 25/-

Annual 200/-

बिस्मिल्ली तअला

कुल पृष्ठ : 76

ISSN 2456-8384

वर्ष
15

अंक
6

न्यास संस्थापन

15 जमादिलउला 1424 हि० / 16 जुलाई 2003 ई०

पत्रिका विमोचन

15 जमादिलउला 1425 हि० / जुलाई 2004 ई०

पर्यवेक्षक:

मु० र० आबिद, गोलागंज लखनऊ

सलाहकार समिति

- प्रोफेसर अल्लामा अली मुहम्मद नकवी, अलीगढ़
- डॉ० महदी ख्वाजा पीरी, ईरान
- मौलाना हसन जफर नकवी, कराची
- कैप्टन सिकन्दर रिजवी, लखनऊ
- प्रोफेसर हुसैन कमालुद्दीन अकबर, इलाहाबाद
- सैय्यद इफ्तेखार हुसैन रिजवी, इन्कलाबी
- डॉ० अरशद अली जाफरी, लखनऊ
- काजिम अब्बास खान कुम्मी, आजमगढ़
- शायरे अहलेबैत रजा सिरसिबी, सिरसी
- सै० सैफ तकी नकवी, दिल्ली
- अलहाज मुहम्मद आलिम, हुसैनाबाद, लखनऊ

नूरे हिदायत फाउण्डेशन के

इस्लामी, ज्ञान व शोध

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

दिसम्बर-2018ई०

शुआ-ए-अमल

“लखनऊ”

संरक्षक

काएदे मिल्लत प्रोफेसर मौलाना सै० कल्बे जवाद नकवी साहब

माननीय सै० अहमद अब्बास नकवी साहब, मुम्बई

सम्पादक

सै. मुस्तफा हुसैन नकवी ‘असीफ’ जायसी

उप-सम्पादक

कायम महदी नकवी ‘तजहीब’ नगरौरी

तफज़ुल रिजवी छोलसी, मुहम्मद मुजफ्फर शाकिरी, महदी रजा

मिलने का पता

नूरे हिदायत फाउण्डेशन

इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब, मौलाना कल्बे हुसैन रोड, चौक, लखनऊ - 3

Phone No: 0522-2252230

Mobile No: 08736009814 — 09335996808

प्रकाशक मुद्रक: सैय्यद मुस्तफा हुसैन नकवी द्वारा स्वामी एस कलबे जवाद नकवी के लिए निजामी प्रेस विकटोरिया स्ट्रीट अपोजिट हसनैन मार्केट, चौक, लखनऊ (उ० प्र०) से मुद्रित तथा नूरे हिदायत फाउण्डेशन, इमामबाड़ा गुफ़रानमआब, मौलाना कल्बे हुसैन रोड, चौक लखनऊ (उ० प्र०) से प्रकाशित।

सम्पादक: सैय्यद मुस्तफा हुसैन नकवी

दिसम्बर-2018

मासिक “शुआ-ए-अमल” लखनऊ

3

सम्पादन समिति

- ⇒ डॉ० अमानत हुसैन नक्वी
- ⇒ हैदर अब्बास नक्वी, इलाहाबाद
- ⇒ वासिफ अहमद नक्वी 'समीर'
- ⇒ अशतर अब्बास नक्वी औरंगाबाद
- ⇒ फ़िरोज़ अली कोपागंज, मऊ
- ⇒ जुलफ़ेकार हैदर आजमी
- ⇒ अलहाज मिर्जा हुमायूँ कदर
- ⇒ डॉ० आरिफ अब्बास, लखनऊ
- ⇒ रेहान आलम, लखनऊ
- ⇒ सलमान हुसैन, लखनऊ
- ⇒ बिनते ज़हरा 'नदल हिन्दी'
- ⇒ अलहाज फ़रीद महदी रिज़वी

- ज़फ़र हुसैन रिज़वी ब्यूरोचीफ़ मुम्बई
- इरफ़ान हैदर, ब्यूरोचीफ़ मध्यप्रदेश
- कैफ़ तकी नक्वी, ब्यूरोचीफ़ देहली

R.N.I. No.
UPBIL/2004/13526



Postal Regd. No.
SSP/LW/NP-75/2017-2019



WEBSITE:

www.noorehidayatfoundation.org
www.naqeeblucknow.com

E_mail:

noorehidayat@yahoo.com
noorehidayat@gmail.com
shuaeamallucknow@gmail.com

वार्षिक अंशदान

- 1- एक साल के लिए 200/-
- 2- पांच साल के लिए 800/-
- 3- लाईफ़ मिम्बरशिप 5000/-

विषय सूची

दिसम्बर-2018^{ई०}

रबीउस्सानी 1440 हि०

नं० लेख व लेखक पृष्ठ

- | | |
|--|----|
| 1- हुसैनिय-ए-हज़रत गुफ़रानमआब
जुबदतुल उलमा मौलाना सै० आगा महदी, कराची | 5 |
| 2- शहीदे इन्सानियत (किस्त-19)
आयतुल्लाहिल उजमा सैय्यदुल उलमा मौलाना सै० अली नकी नक्वी | 9 |
| 3- मुख्य समाचार
(इदारा) | 17 |

मासिक

“शुआ-ए-अमल”
(हिन्दी-उर्दू)

“ख़ानदाने इज्तेहाद नम्बर”
दैनिक नकीब लखनऊ

और नूरे हिदायत फ़ाउण्डेशन से प्रकाशित
सभी किताबों को डाउनलोड करने के लिए
लॉग आन करें हमारी वेबसाइट

Log on Our Website:

www.noorehidayatfoundation.org,
www.naqeeblucknow.com

हुसैनिय-ए-हज़रत गुफ़रान मआब^(र० अ०) जुबदतुल उलमा मौलाना सै० आगा महदी साहब लखनवी, कराची

बयादर ई हुसैनिया कि सनए किबरिया बीनी कुशादा हर तरफ़ बाबे बाजे इल्मे मुरतज़ा बीनी (अज़ीज़ लखनवी अल मुतावप्फ़ी 1935ई०)

वतने मालूफ़ लखनऊ की इस तारीख़ी इमारत पर मैंने अपने दौराने इदारते अल वायज़ दिसम्बर 1948ई० में 250 सतरें नज़रे किरतास की थीं जो मदरसतुल वायज़ीन लखनऊ के नशरियात में महफूज़ हैं। उसके बाद दौराने कयामे वतन की आख़िरी तालीफ़ “तेरहवीं सदी का लखनऊ” लिखते वक़्त इमाम बाड़े पर मज़ीद तबसेरा किया। मगर यह मुअख़्ख़ेरूज़ ज़िक्क़ तास्सुरात ज़ेवरे तबअ से आरास्ता नहीं हुए कि कारईन ख़तीब की ज़ियाफ़ते तबअ के लिए आज फिर इस मौजू पर क़लम उठाता हूँ।

उस्ताज़ुल कुल, मुजद्देदुश शरीअत, मोहयेयुल मिल्लत आयतुल्लाहिल उज़मा फ़िल आलमीन मौलाना सै० दिलदार अली नसीराबादी(र०) के अलकाब थे। गुफ़रान मआब जिनका ख़ानदान शीई दुनिया में सूरज से ज़ियादा चमकता है। ममदूह ने अपनी हयात के आख़िरी दौर 1227हि० ब अहदे नवाब सआदत अली ख़ान मरहूम शिया आबादी की एक लम्बी चौड़ी ज़मीन पर इस इमाम बाड़े को तामीर किया जो अब विक्टोरिया स्ट्रीट और किंग स्ट्रीट वस्ते शहर की दो बड़ी सड़कों के बीच में वाक़े है। क़दीम बज़ाज़े की सड़क से गुज़र कर नई तरकारी मंडी की सड़क पर दाहिनी तरफ़ जुबदतुल उलमा मुईनुल मोमेनीन मौलाना सै० अली नकी साहब

मरहूम का इमाम बाड़ा और बाईं सम्त आगा बाक़िर मरहूम का इमाम बाड़ा पड़ता है। यह दोनों अज़ा ख़ाने भी अहदे शाही की तामीर और तारीख़ी इमारतों में हैं। उधर से गुज़रते हुए नाले के पुल पर पहुंच कर इमाम बाड़े के निकास का फाटक दिखाई देता है जो ज़्यादा बलंद और रफ़ी नहीं है। इमारत के हुदूदे अरबआ यह हैं, सम्ते मशरिक, मग़रिब में शाह राहे आम, जुनूब में अबदुर रहीम कंट्रेक्टर का कारख़ाना चौब इमारती और शिमाल में किंग जार्ज हस्पताल(मेडीकल कालेज)का वाटर वर्क्स है। आमद व रफ़त के 3 दरवाज़े हैं जिनमें मशिरकी दरवाज़ा महल्ल-ए-दरियापुर की सम्त है जिसके बाद तक अराज़ी इमाम बाड़ा बाकी है। इधर से हलक़-ए-वज़ीर गंज के लोग अज़ा ख़ाने में दाख़िल होते हैं। कालेज की सम्त का दरवाज़ा आने वालों के इस्तेमाल में नहीं है।

इस इमारत के 3 दरजे हैं। पहले में सर ता सर शह नशीन है और अहदे क़दीम की चौबी ज़रीहें, चौबी चौखटे पर बलंद करके इस तरकीब से रखी गई हैं कि कुबूरे उलमा पर फ़ातेहा ख़्वानी करने वाले आसानी से पहुंच सकें। जनाब सुलातानुल उलमा रिज़वान मआब(र०) और मलेकुल उलमा सै० बंदा हुसैन साहब मग़फ़ेरत मआब मुजतहेदीन की क़ब्रें दरज-ए-अव्वल में ज़ेरे ज़रीह हैं। दूसरा दरजा जो वुस्ता है काफ़ी वसीअ और पहले दरजे से चौड़ा और चकला है। उसमें अहदे गुफ़रान मआब(र०) का बहुत बड़ा चौबी मिम्बर

रु ब किबला नस्ब है। तीसरा दरजा या बाहर का दालान अर्ज में कुछ ज़्यादा नहीं है। सख़चियां शरकन व गरबन सिर्फ़ वुस्ता दरजे में हैं और समते किबला की सख़ची में गुफ़रान मआब(र०) और उनके ख़लफ़े असगर सय्येदुल उलमा सय्यद हुसैन इल्लिय्यीन मकान(र०) के दो मज़ार नुमायाँ हैसियत से हज़ीर-ए-चौबी में ज़ियारत करने वालों को दावते फ़िक्र व नज़र देते हैं। क़ब्रे सैय्यदुल उलमा का संगे मज़ार इस क़दर चौड़ा और बड़ा है कि पूरी क़ब्र ढकी हुई है और ऐसा पत्थर लखनऊ के किसी फ़रमां रवां की क़ब्र पर भी नहीं है। उसकी जगह यानी गुफ़रान मआब(र०) के पाईने पा उसूलन उनके बड़े साहब ज़ादे सुलतानुल उलमा की क़ब्र होना चाहिए थी मगर चूंकि सैय्यदुल उलमा ने बड़े भाई के सामने इस दुनिया-ए-ना पायदार को छोड़ा, इस लिए यह नुमायां मक़ाम सुलतानुल उलमा के हुक्म से उनके छोटे भाई को मिला। दुनिया-ए-अदब के ताबिंदा सितारे मियाँ मुशीर मरहूम ने मजलिसे फ़ातेहा ख़्वानी सैय्यदुल उलमा में जो मरसिया पढ़ा उसकी एक बैत सुलतानुल उलमा के तास्सुरात की तसवीर कशी करती है,

आँसू रवाँ थे ग़ैरते इलयास के लिए
शब्बीर यूँ ही रोए थे अब्बास के लिए
यह पूरा मरसिया तक़रीबन 33 बंदों का मेरे पास बे हम्देही अब तक मौजूद है।
मज़ारे गुफ़रान मआब की सख़ची के सामने दरज-ए-अव्वल का जो बरामदा है उसपर गुफ़रान मआब का पुश्त नामा और सिलसिल-ए-रिवायत का क़लमी शजरा था जो अस्तर कारी गिरने के साथ रफ़ता-रफ़ता महू हो गया। दीवार के उस रंगीन क़तबे के नुक़्श अब तक मेरी नज़र में हैं। क़ौम मे

कितने इल्मी ख़ज़ाने ऐसे हैं जो गुफ़लत का शिकार हो गए। यह शजरा इजाज़त की मदद से अब भी तैयार हो सकता है।

आज तमाम इमाम बाड़ा और वसीअ सहेन क़ब्रो से भरा हुआ है। और आतश मरहूम का यह शेअर सही मालूम होता है,

निकले पहलू में हर इस नाम के सत्तर सत्तर

न मिली बादे फ़ना गोर में भी जा ख़ाली
इमाम बाड़े की इमारत हज़रत गुफ़रान मआब(र०) के इख़लास और उनकी माली इस्तेताअत पर भी गवाह है। उनकी दिली तमन्ना थी कि इस अज़ा ख़ाने में सिर्फ़ उनकी जेब का पैसा सर्फ़ हो और मज़हब नवाज़ हुक्मत से कोई मदद न ली जाए। वह अगर सलतनते वक़्त से मदद लेते तो जिस फ़रमाँ रवा ने सूबे के फ़ुक़रा को जागीरें देकर फ़लक बोस अज़ा ख़ाने तामीर कर दिए उसके लिए खुद राजधानी में एक इमाम बाड़े का बना देना दुश्वार न था। यही वजह है इमारत में न वह आला मसालेहा दिया गया है जो शाही इमारतों में इसतेमाल होता था न संगे जराहत की आमेज़िश वाला चमक दार और मज़बूत प्लास्टर है जो हम वज़ीर बाग़ के इमाम बाड़े मुग़ल साहेबा में देखते हैं। न क़ालिब दार छत है। ज़ाहिर दारी और इंजीनियरी के क़माल का कोई नमूना नहीं। लखौरी ईंटों की मामूली दीवारें ग़ैर अरीज़ आसार मामूली सक्फ़ और छत में लकड़ी के लट्ठे जिनपर धन्नियाँ खुले हुए दर, यह है इमाम बाड़ा गुफ़रान मआब(र०)। सहेन के हिस्से में गिर्दा गिर्द इमारत थी जिसको तालिब इल्मों के लिए बनवाया था। बाज़ हुजरे अब भी बाकी हैं और मशरिकी हिस्स-ए-सहेन पर कुछ कच्चे मकानात बन गए हैं जिनपर

गैर काबिज़ हैं और कुछ इल्म नहीं कि कब इमाम बाड़े के कब्जे से यह हिस्सा निकला। अहदे नवाबी खत्म होने पर शाही दौर शुरू हुआ फिर हवा-ए-इनकेलाब ने अंग्रेजों की हुकूमत कायम की। और अब इमाम बाड़ा चौथे कांग्रेसी ज़मान-ए-हुकूमत में अपनी उम्र की दूसरी सदी खत्म कर रहा है।

मशरिकी दरवाज़े से गुज़रने पर जिसको कदीम ख़सरे में दरियाई टोले का लकड़ हासिल है और जिस सम्त से किंग स्ट्रीट शुरू होती है दरमियान में एक मुख़तसर छोटी मस्जिद थी जिसके गिर्द व पेश में 40 साल कब्ल कंधी वाले सींग की छोटी बड़ी कंधियां बनाते और फ़रोख़्त करते थे। यह मस्जिद भी हुदूदे इमाम बाड़े का जुज़ थी और सोहबते जनाब कुदवतुल उलमा(र०) के बाज़ असहाब ने अपनी ज़ाती तहकीक़ से बताया कि औलादे गुफ़रान मआब(र०) में किसी खातून के पैसे से तामीर हुई थी और अपनी अकल्लियत में वीरान रहने से दूसरे लोगों के ज़ेरे इनतेज़ाम आई और अब एक बेहतरीन नक्शा और खुशनुमा तरीन सूरत में बड़ी बलंद हैसियत से तामीरे जदीद में दूर दूर से नज़र आती है और मस्जिद से मुत्तसिल दर्सगाहे अतफ़ाल है जिसमें बच्चों को तालीमे दीन दी जाती है। यह मस्जिद शर्क की तरफ़ है और गरबी मस्जिद जनाब सुलतानुल उलमा की तामीर करदा है। जिसपर इंशा अल्लाह फिर कभी बहस करूंगा।

शिया कौम के रग व पै में रूह दौड़ाने वाली अज़ादारी की बुनियाद इसी अज़ा ख़ाने से हुई। औलादे गुफ़रान मआब(र०) के कौमी व मज़हबी ख़िदमात के सिलसिले में मज़हब व मिल्लत के लिए प्रेस की ज़रूरत का भी एहसास था और इस इमाम बाड़े से उलूमे

दीनिया की नश्र व इशाअत भी हुई। बानिए मतबा कौन था। लखनऊ में सखावत हुसैन नामी दो बुजुर्ग थे। एक दारोगा सै० सखावत हुसैन ताजिरे कुतुब बाग़ मक्का लखनऊ। दूसरे मौलाना सै० सखावत हुसैन साहब मरहूम। आप खानदाने इजतेहाद में सबसे बुजुर्ग और सिन रसीदा थे। आप ही के दो साहब ज़ादे मौलाना सै० काज़िम हुसैन और मौलाना सै० वजाहत हुसैन नाज़िम, मनतिक व खेताबत के मेहर व माह थे जिनके तलामेज़ा लखनऊ से कराची तक आसमान के तारों की तरह छिटके हुए हैं। मौलवी साहब मौसूफ़ ने इमाम बाड़े में मतबा “कनज़ुल उलूम” कायम किया। जिससे मुग़लता आम्मतुल वुरुद और दूसरे मौजूआत पर किताबें नश्र हुईं। नहीं कहा जा सकता कि यह प्रेस बाकी रहा या दूसरा प्रेस खुला। जिससे ख़ल्लाके मआनी मुनशी सै० इस्माईल हुसैन मुनीर शिकोहाबादी की मअरका आरा मसनवी तबा हुई जो उर्दू अदब और फ़ज़ायले आले रसूल(स०) का 225 शेअरों में एक यादगार मजमूआ है। मदहे अइम्म-ए ताहेरीन में ऐसी किताब आज तक शाए नहीं हुई। हज़रत उम्मीद लखनवी की उसपर तकरीज़ भी है जो अहफ़ादे गुफ़रान मआब(र०) के मुसल्लमुस सबूत शायर और हम अस्त्रे अनीस व दबीर थे। प्रेस में शेख़ एहसान अली थे जिनकी अदबियत खुद एक मुस्तक़िल मौजू है। मसनवी 1291हि० में छपी।

जनवरी 1874ई० में इमाम बाड़े से फ़िदा अली ऐश ने अख़बार “आसारुल इमसार” जारी किया जो हर पंज शम्बा को छपता था और जुलाई से उसी साल “असहेहुल अख़बार” जारी हुआ मुमकिन है कि उसके नंबर किसी कदीम लाइब्रेरी में हों। रिसाला नया दौर बाबत दिसम्बर 1959ई० में हर दो जरायद

का जिक्र देखो। “शिया कान्फ्रेंस” और “महाज हुसैनी” का आगाज़ जिसमें 26 अगस्त 1939ई0 152 दिनों तक कांग्रेसी हुकूमत के खिलाफ़ कौम में गिरफ़्तारियाँ रही इसी इमाम बाड़े से शुरू हुआ। शामे गरीबाँ की मजलिस कौम में इसी इमाम बाड़े की मुस्तहकम बुनियाद है।

इस हुसैनिया की मुकद्दस ज़मीन में ला तादाद अरबाबे कमाल, उदबा, होकमा, शोअरा, मोमेनीन और मुजतहेदीन सुपुर्दे खाक हैं। गुफ़रान मआब(र0) और उनकी औलाद और तलामिज़ा की मुकद्दस रूहें जो राबता रखती हैं वह अज़हरे मिनश शम्स है। बाज़ उलमा—ए— इराक़ ने भी जज़्ब—ए— कमाल में इस ज़मीन को अपनी ख़्वाब गाह बनाया और ज़वारे अइम्म—ए— ताहेरीन(अ0) के दो पैकरे इल्म व अमल यहां दफ़न हुए और “वमा तदरी नफ़सुन बे अय्ये अरज़िन तमूत” की सदा सही साबित हुई। मुल्ला मिर्ज़ा अमीन ख़ुरासानी और मुल्ला मुहम्मद महदी इब्ने मुहम्मद शफ़ी इस्तेराबादी माज़िन्दरानी। मुअख़िख़ेरुज़ ज़िक्र की शख़्सियत मुस्तग़ना अनिल मदहा है। अकाबिरे ख़ानदान ने उनको अपने खुसूसी इख़तेयारात में सख़ची में जगह दी तारीख़ मुलाहेज़ा हो,

इस्तेराबाद ऊरा बूद वतन
ऐ वाय ब जी कादा बरफ़्त अज़ आलम
शुद दफ़न करीब कब्रे दिलदार अली
मुल्ला महदी बयाफ़ता कस्रे इरम
1259हि0

यह वह कब्र है जिसपर उलमा फ़ातेहा पढ़ने की कोशिश करते थे और लौहे मज़ार साफ़ करते हुए कहते थे। ऐसा बलंद मरतबा आलिम अब तक इराक़ से हिन्द नहीं आया। (तज़किरए बे बहा, स0328)

पूरब और पश्चिम के हुजरे तक़रीबन

100 साल बाद तक बाकी रहे जिनमें तालिबाने इल्म और अहले फ़ज़ल आबाद थे। इस सिलसिले में मौलाना सै0 अली नकी दाईपूरी प्रोफ़ेसर किंग कालेज का नामे नामी बहुत नुमायां है जिनकी 1305हि0 के बाद वफ़ात हुई वह मुद्दते दराज़ तक क़याम फ़रमा रहे। (देखो तज़किर—ए— बे बहा, स0233)

शोअरा की ज़बानों पर हर दौर में इमाम बाड़े की अज़मत का तज़किरा रहा। अजीज़ लखनवी का शेअर सरनाम—ए— सुख़न में आपने पढ़ा।

मद्दाहे आले मुहम्मद(स0) मिर्ज़ा काज़िम हुसैन महशर अल मुतवफ़्फ़ी 1361हि0

वह हुसैनिया कि जो है क़स्रे फ़िरदौसे बरीं मदफ़ने गुफ़रान मआब व मरकज़े अरबाबे दीं मुनहदिम होने को है ऐ कौमे शिया होशयार तुझसे फ़रियादी है इक इक ज़रए खाक मज़ार प्रोफ़ेसर महदी हुसैन एम0 ए0 नासेरी अल मुतावफ़्फ़ी 1349हि0

जब तक इस दहर में नामे शहे ना शाद रहे या इलाही यह अज़ा ख़ाना भी आबाद रहे अल्लामा मुफ़्ती मीर मुहम्मद अब्बास शूस्तरी अल मुतवफ़्फ़ी 1306हि0

ई ख़्वाब गाहे मुजतहेदुल अस्म वज़ ज़मान सैयद मुहम्मद अस्त व हुसैन अस्त व हम हुसैन ई जा हज़ार मरतबा मजलिस बना शुदा अज़ क़स्र हाय अशक़ फ़तादह दुरे अदन हर सुफ़फ़ा ओ रवा के वै ओ हर हज़ीरा अश पाकीज़ा मनज़िले बरकातस्त बे सुख़न दर हर मक़ाम वै कि सुतूने सतादा अस्त सरवीस्त अज़ हदीका व शमइस्त दर लगन लिसानुल कौम हज़रत सफ़ी लखनवी अल

(बकिया पेज नं016,.....पर)

शहीदे इन्सानियत

किस्त 19

आयतुल्लाहिल उजमा सैय्यदुल उलमा मौलाना सै० अली नकी नकवी ताबा सराह

दूसरे मौके पर जब इब्ने जुबैर ने आप से चुपके चुपके कान में कुछ कहा तो इब्ने जुबैर के जाने के बाद अपने कुछ मखसूसीन से फरमाया। जानते हो इब्ने जुबैर ने क्या कहा? इब्ने जुबैर ने कहा कि आप मक्के में क्याम फरमाइये और बाहर न जाइये। उसके बाद आप ने फरमाया: खुदा की कसम मैं एक बालिश्त भर मक्के के हुदूद से बाहर क़त्ल किया जाऊँ। मुझे ज़्यादा पसन्द है इससे कि एक बालिश्त भर मक्का के हुदूद के अन्दर मारा जाऊँ। और कसम खुदा की अगर मैं किसी जानवर के सूराख में जा कर रहूँ तब भी यह लोग मुझको वहाँ से बाहर ले आयेंगे। यहाँ तक कि जैसे चाहते हैं मेरे साथ सुलूक करें। खुदा की कसम मुझ पर यह लोग तअददी (जुल्मो सितम) करेंगे जैसे यहूद ने रोज़े शम्बा के बारे में जुल्म व तअददी से काम लिया।¹

इन हालात में ज़ाहरी असबाब की बिना पर आप के लिए कूफ़े को तशरीफ़ ले जाना नागुज़ीर (ज़रूरी) था और आपके लिए अहले कूफ़े की दरख़्वास्त को मुस्तरद (नज़र अन्दाज़) करना मुनासिब न था। फिर भी आप ने बहस्वे ज़ाहिर असबाब (ज़ाहरी हालात की वजह से) एहतेयाती तदबीर यह इख़्तियार फ़रमाई की अपने चचा ज़ाद भाई मुस्लिम बिन अकील को जो मदीनेसे आपके साथ आये थे।²

अपना नुमाइन्दा बना कर हालात का मुशाहिदा करने के लिए कूफ़े जाने पर मामूर

फ़रमाया।³ और उसके लिए आप ने एक ख़त अहले कूफ़ा के नाम लिख कर हानी बिन हानी और सईद बिन अब्दुल्लाह के सिपुर्द किया जो अहले कूफ़ा के आख़िरी क़ासिद थे और उन्हें हुक्म दिया कि वह जनाबे मुस्लिम^{अ०स०} के आगे रवाना हों।

इस ख़त का मतलब यह था कि हानी और सईद तुम्हारे खुतूत लेकर पहुँचे और यह दोनों शख्स तुम्हारे सब से आख़िरी क़ासिद (डमेमदहमत) हैं जो मेरे पास आये हैं। जो कुछ तुम ने लिखा है मैं ने ग़ौर से पढ़ा और समझा। तुम में से अक्सर का कौल यह है कि हमारे सर पर कोई इमाम नहीं है। आप आइये। शायद खुदा हम को आपकी बदौलत हक़ पर मुजतमा (इकट्ठा) कर दे। अच्छा तो मैं तुम्हारी जानिब अपने भाई, चचा के बेटे और मख़सूस मोतमिद (भरोसे मन्द) को रवाना करता हूँ और उन्हें हुक्म देता हूँ कि वह मुझको तुम्हारे हालात के मुतअल्लिक़ इत्तेला दें। अगर उन्होंने इत्तेला दी कि तुम्हारी जमाअत और अहले हल व अक्द (ज़िम्मेदार अफ़राद) इस अम्र पर जिसे तुम ने अपने खुतूत में ज़ाहिर किया है मुत्तफ़िक् (एक जुट) हैं तो मैं अनक़रीब तुम्हारी तरफ़ आता हूँ और वाज़ेह रहे कि इमाम के मानी नहीं सिवा इसके कि जो किताबे इलाही पर आमिल (अमल करने वाला) अदालत का पाबन्द, हक़ का मुत्तबेअ (फ़रमाँबरदार) और अपनी ज़ात को खुदा की मर्ज़ी पर वक्फ़ किये हुए हो। वस्सलाम।⁴

¹तबरी जि/6, पेज/217

²अख़बारुत तुवाल, पेज/132

³तबरी जि/6, पेज/194, अख़बारुत तुवाल पेज/232

⁴तबरी जि/6, पेज/197-198, व पेज/210-211

इस खत की इबारत से ज़ाहिर है कि मुस्लिम बिन अकील को जंग पर मामूर नहीं किया गया था और न वह कूफ़े की तस्खीर (अपनाने) की गरज़ से भेजे गए थे बल्कि वह सिर्फ़ एक नुमाइन्दे की हैसियत रखते थे कि कूफ़े की राय अम्मा और वहाँ के लोगों के हालात व खयालात का हज़रत इमाम हुसैन^{अ०स०} के मुतअल्लिक अन्दाज़ा कर के आप को उसकी इत्तेला दें। जनाबे मुस्लिम, कैस बिन मुसहर सैदावी और अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्लाह बिन कुदन अरहबी, अहले कूफ़े के नामा बरों (कासिदों) के साथ^{हुक्मे} इमाम की तामील में मक्के से रवाना हुए और पहले मदीन-ए-रसूल गए। वहाँ मस्जिदे पैगम्बर में नमाज़ पढ़ी। फिर अज़ीज़ व अकारिब से रूख्सत हुए और कबीला-ए-कैस में से दो अरबों को जो रास्ते से वाकिफ़ थे अपने साथ लेकर कूफ़े की तरफ़ रवाना हुए। अजब इत्तेफ़ाक़ है कि दोनों रास्ते के माहिर होते हुए जब आप को लेकर चले तो एक दम रास्ता भूल गए। नतीजा यह हुआ कि रेगिस्तान में पड़ गए। प्यास का ग़लबा हुआ और इसी आलम में एक ऐसे मक़ाम पर पहुँच कर जहाँ से दूर मुसाफ़िरों के चलने की सड़क नज़र आ रही थी वह दोनों बिल्कुल बेहाल हो गए। उन्होंने हाथ से इशारा कर के सड़क का पता दिया और फिर उन में से एक^० या दोनों गिर कर हलाक हो गए। जनाबे मुस्लिम और उनके साथियों की हालत भी बहुत तबाह हो चुकी थी। मगर यह उनकी ग़ैर मामूली कुव्वते बर्दाश्त थी कि उन्होंने किसी न किसी तरह अपने को शाहराह तक पहुँचा दिया और बतने ख़ब्त (घाटी) के एक

^०तबरी जि/6, पेज/298

^०तबरी जि/6, पेज/194

^०तबरी जि/6, पेज/198, अख़बारुत तेवाल पेज/232

चश्मे पर जिसका नाम मुजैइक़ था क़याम करके वहाँ से इमाम हुसैन^{अ०स०} की ख़िदमत में ख़त भेजा जिस में आगाज़े सफ़र के इस हादसे पर अपने ग़ैर मामूली तअस्सुरात का इज़हार करते हुए लिखा था कि मेरा दिल कूफ़े के सफ़र के लिए किसी तरह आमादा नहीं है मगर दोबारा इमाम के ताकीदी हुक्म ने मजबूर कर दिया और वह कूफ़े की तरफ़ रवाना हुए।^० कूफ़े पहुँच कर हुक्मे इमाम के मुताबिक़ जनाबे मुस्लिम ने अमन पसन्दी से काम लिया। हाकिम दारुल अमारा (हाकिम का महल) में मौजूद था मगर मुस्लिम ने उससे कोई तअरूज़ (छेड़ छाड़) न किया। अगर कोई दूसरा शख्स होता जिसे शोरिश अंगेज़ी मन्ज़ूर हो तो उसका पहला काम यह होता कि दारुल अमारा (हाकिम का महल) पर कब्ज़ा करे मगर मुस्लिम ने अपने अमल से ज़ाहिर कर दिया कि हमें तुम्हारी सलतनत से मतलब नहीं। तुम्हारी हुकूमत से कोई गरज़ नहीं। हमें तो सिर्फ़ तालिबाने हिदायत की तलाश और उनकी मज़हबी व अख़लाकी इस्लाह मददे नज़र है।

मुस्लिम के वुरुदे (दाख़िले) कूफ़ा के मुतअल्लिक हालात से अन्दाज़ा होता है कि सुलैमान बिन सुर्द ख़ेज़ाई उस वक़्त कूफ़े में मौजूद न थे वरना मुस्लिम उन ही के मक़ान पर क़याम करते इस लिए कि वह उनकी ही तहरीक के रूहे रवाँ (ख़ास) और उस जमाअत में सब से ज़्यादा साहिबे वजाहत और ज़ी असर थें मजबूरन मुस्लिम ने मुख़तार बिन

^०अख़बारुत तेवाल पेज/232, तबरी जि/6, पेज/198

अबी उबैदा सक़फी के घर में क़याम किया।⁹ कूफ़े में यह ख़बर तेज़ी के साथ फैल गई और लोग जूक़ दर जूक़ (कसरत से) के पास मुलाक़ात के लिए पहुँचने लगे। जब काफ़ी मजमा हो गया तो मुस्लिम ने इमाम हुसैन^{अ०स०} का ख़त जो उस जमाअत के नाम था पढ़ कर सुनाया जिसको सुनकर हाज़रीन में काफ़ी जोश के आसार नमूदार हुए। आबिस बिन अबी शबीब शाकरी ने खड़े हो कर हम्दो सनाए इलाही के बाद अपने जाती खयाल को ज़ाहिर करते हुए कहा: “मुझको आम लोगों के मुतअल्लिक़ किसी इज़हारे राय का हक़ नहीं है और न मुझे यह मालूम है कि उनके दिलों में क्या है और मैं उनकी तरफ़ से वक़ालत करके आपको धोखे में मुबतिला नहीं करना चाहता मगर मैं वह ज़ाहिर करता हूँ जिसे मैं ने अपने दिल में ठान लिया है। खुदा की क़सम मुझे जिस वक़्त भी आप दावत देंगे लब्बैक़ कहता हुआ हाज़िर हूँगा और आपके हमराह दुश्मनों से जंग करूँगा और उस वक़्त तक शमशीर ज़नी करूँगा कि इस ज़िन्दगी को ख़त्म कर के अपने खुदा से मुलाक़ात करूँ और मेरा मक़सद इससे सिवा रज़ाये परवरदिगार के कुछ न होगा।”

⁹अख़बारुत तवाल पेज/232, तबरी जि/6, पेज/199 व जि/7, पेज/58, इरशाद पेज/211, उस घर के निशानात ग़ालिबन चौथी हिजरी तक बाकी थे चुनानचे अबू हनीफ़ा देनवरी ने लिखा है कि अब यह घर “दारे मुसैय्यब” के नाम से मशहूर है। अख़बारुत तवाल पेज/232, तबरी ने लिखा है। “दारे मुस्लिम बिन मुसैय्यब, के नाम से मशहूर है। तबरी जि/6, पेज/199, दूसरी जगह “दारे मुस्लिम बिन मुसैय्यब” दर्ज है। तबरी जि/7, पेज/57)

यह तक़रीर ख़त्म होना थी कि हबीब इब्ने मज़ाहिर खड़े हुए और कहने लगे। “मरहबा, जज़ाक़ल्लाह। कितनी मुख़तसर लफ़्ज़ों में तुम ने हकीक़ते हाल को वाज़ेह किया है।” फिर मुस्लिम की तरफ़ ख़िताब कर के कहा। खुदा की क़सम मेरा भी ज़ाती हैसियत से यही खयाल है जिसको अब्बास बिन अबी शबीब ने अपने लफ़्ज़ों में ज़ाहिर किया। इसी से मिलती जुलती लफ़्ज़ों में सईद बिन अब्दुल्लाह हनफ़ी ने ताईद की जिस के बाद मजमा मुतफ़र्रिक़ (छट गया) हुआ।¹⁰ख़त के मजमून की बिना पर उस कारवाई का मक़सद ज़ाहिर है। यानी यह अहदो पैमान इस गरज़ से न था कि मुस्लिम कोई ज़ारिहाना इक़दाम करना चाहते थे। और उसके मुतअल्लिक़ यह लोग नुसरत और मदद का वादा कर रहे थे और न मौजूदा सूरते हाल की बिना पर यह खयाल किसी दिमाग़ में जगह पा सकता था कि चन्द ही रोज़ में तने तनहा मुस्लिम के मुक़ाबले में फौज क़शी होगी और उसके लिए इस जमाअत को तैयार करना चाहिए। बल्कि यह अहदो पैमान सिर्फ़ इमाम हुसैन^{अ०स०} की तशरीफ़ आवरी की पेश निहाद (पेश आने वाले) और उस मौक़े के लिए उन लोगों के अज़ाएम व नीयात (इरादों) के अन्दाज़े के तौर पर था।

मुस्लिम बिन अक़ील के वुरुद की ख़बर कूफ़े में आम तौर पर मशहूर हो ही चुकी थी और उस फ़िज़ा के लिहाज़ से जो इमाम हुसैन^{अ०स०} को दावत देने की तहरीक़ के सिलसिले में इब्तेदा ही से कूफ़े में पैदा हो गई थी और जिस के असबाब वज़ाहत के साथ (साफ़ तौर से) दर्ज किये जा चुके हैं। हर शख़्स ने उस ख़बर का मसरत (ख़ुशी) के साथ इस्तेक़बाल किया।

¹⁰तबरी जि/6, पेज/199

यज़ीद की खिलाफ़त से बसबब उसकी सियाह कारियों के बेज़ारी एक तरफ़, हज़रत हुसैन बिन अली^{अ०स०} की हर दिलअज़ीज़ी न सिर्फ़ ख़ानदानी वजाहत के बाइस बल्कि अपने अख़लाक़ व कमालात के लिहाज़ से दूसरी जानिब, वह लोग कि जो मुस्लिम बिन अक़ील की तहरीक के मुबल्लिग़ व दाई (दावत देने वाले) थे उनकी ज़ाती वजाहत और तअल्लुकात तीसरी तरफ़, और “कुल्लो जदीदुन लज़ीज़। (नई चीज़ का मज़ा)” के तबई क़ानून के मुताबिक़ हर ताज़ा तहरीक में जो लज़ज़त होती है वह चौथी जानिब इन तमाम असबाब की बिना पर हज़रत मुस्लिम के हाथ पर एक हफ़्ते के अन्दर बारह¹¹ या अट्ठारह हज़ार¹² कूफ़ियों ने बैयत की लेकिन क्या यह सब दोस्ताने अली^{अ०स०} थे? क्या कूफ़े में ज़ियाद व आले ज़ियाद की बीस साल हुकूमत के बाद जिस में खिंची हुई तलवारें और जल्लादों के हाथ बराबर अपनी सफ़ाकी दिखाते रहे हों और दस्त व पा (हाथ पैर), सर व ज़बान के क़ता व बुरीद (काटने) का सिलसिला बराबर जारी रहा हो, कूफ़े में इतनी तादाद में अली^{अ०स०} के दोस्त मौजूद हो सकते थे? हरगिज़ नहीं। सच्चे शिया तो कूफ़े में पहले ही कम थे और जो थे भी वह मुआविया के क़त्लो ग़ारत के बाद तक़रीबन नीस्तो नाबूद हो चुके थे। उसके बाद थोड़े से छुपे छुपाए अफ़राद बाकी हो सकते हैं। वरना जितने थे वह वही अफ़राद थे जो हज़रत अली^{अ०स०} को चौथा ख़लीफ़ा तस्लीम करके महज़ साथ होने की वजह से लुग़वी मानी (सिर्फ़ नाम) के एतेबार से षिया कहे जाते थे और वह भी अब ज़्यादा तादाद में बाकी न थे। इस सूरत में यह मानना

¹¹तबरी जि/6, पेज/194

¹²तबरी जि/6, पेज/211

नागुज़ीर है कि मज़कूर—ए—बाला सतही (सामने के) और आरज़ी (वक्ती) असबाब से जो राय आम्मा हमवार हुई हो उस में कोई वज़न नहीं हो सकता। बेशक जब इस तहरीक के इब्तेदाई मुहर्रिकीन (तहरीक से जुड़े हुए) को राय आम्मा की नौइयत समझने में ग़लती हुई हालाँकि वह यहीं के रहे सहे परवरदा और तजुर्बा याफ़ता थे तो जनाबे मुस्लिम को जो कि यहाँ परदेसी की हैसियत रखते थे, धोखा होना काबिले तअज्जुब नहीं है।

मुस्लिम की तहरीक को चलाने वाले उनकी सदा पर सब से पहले लब्बैक कहने वाले और सब से पहले जलसे में जाँबाज़ी का इकरार करने वाले और राय अम्मा को हमवार करके मुस्लिम की नुसरत व हिमायत पर आमादा करने वाले उन में से अक्सर बेशक सच्चे, ख़ालिस और मुख़लिस हमदर्द और दोस्त थे और उनका काम यही था कि वह शहर की फ़िज़ा को मुस्लिम के मुवाफ़िक़ बना दें। जिस में उनको बज़ाहिर खातिर ख़्वाह कामयाबी हुई लेकिन आइन्दा के इन्क़ेलाबात कोई दूसरी सूरत पैदा न करेंगे। उसकी ज़िम्मेदारी किसी पर आएद नहीं हो सकती। बेशक उन कलीलुत तादाद (कम लोग) ख़ालिस दोस्तों ने अपने इकरार और अहदे जाँबाज़ी पर बेहतरीन तरीक़े से अमल किया और जो कहा था उसे कर दिखाया, जिस के मुशाहदे के लिए मुस्तक़िबल का इन्तेज़ार करना चाहिए।

जनाबे मुस्लिम बिन अक़ील^{अ०स०} को हालात खुशगवार और मुताबिक़े कौलो क़रार (बात पर डटे) नज़र आये। इस लिए इमाम हुसैन^{अ०स०} को ख़त लिख दिया कि जल्द तशरीफ़ लाईये। हालात साज़गार हैं और अहले कूफ़ा अपने कौल व क़रार पर कायम हैं।¹³ मक़ामी

¹³तबरी जि/6, पेज/211, अख़बारुत तुवाल पेज/243

हुकूमत का तर्जें अमल उनकी निस्बत रवादार न था। कूफे के हाकिम नोमान बिन बशीर ने मिम्बर पर जा कर एक तकरीर की जिसका मजमून यह था कि ऐ बन्दगाने खुदा फितना व फसाद और इफतेराक से परहेज़ करो। उससे ख्वाह मख्याह जानें जाईगी, खून बहेंगे और माली तबाहियाँ होंगी जहाँ तक मेरा तअल्लुक है मैं जब तक कोई जारिहाना इक़दाम (सरख्त क़दम) मेरे खिलाफ़ न हो उस वक़्त तक कोई इक़दाम नहीं करूँगा।¹⁴ कूफे में यह ख़बर गर्म थी कि अब बहुत जल्द ही हुसैन बिन अली तशरीफ़ लाने वाले हैं और इस वजह से हर तरफ़ एक खास चहल पहल नज़र आती थी और हल्का हल्का (Grup.Grup) जमाअत दर जमाअत लोग बैठ कर उस पर इज़हारे ख़यालात करते थे और बेचैनी के साथ दीदा बराह (रास्ता देखना) थे मगर कूफे के अन्दर एक ऐसी जमाअत मौजूद थी जो इन तमाम मन्सूबों को खास सियाह बना देने पर तुली हुई थी और यह उमवी हुकूमत के ख़ैरख्वाह वह लोग थे जिन्हें अन्देशा हुआ होगा कि हुसैन बिन अली अ0 के इक़तेदार के बाद उन्हें अमवाले ख़ल्क (लोगों के माल) पर बे जा तसरूफ़ (खर्च) का मौक़ा बाकी न रहेगा। चुनौनचे उन में से एक शख्स बनी उमय्या के हलीफ़ (तरफ़दार) अब्दुल्लाह बिन मुस्लिम हज़रमी ने तो नोमान बिन बशीर की मज़कूरा बाला रवादाराणा (नर्म) तकरीर के बाद ही खड़े हो कर कह दिया कि यह आप का तरीक़-ए-कार सही नहीं है और आप कमज़ोरी दिखा रहे हैं जिस पर नोमान ने कहा कि “मैं अल्लाह की इताअत के लिए कमज़ोर साबित हूँ यह बेहतर है इससे कि मासियते इलाही करके ज़ोर आवर साबित हूँ।”¹⁵ यह जवाब नोमान के ज़मीर की साफ़ तरज़ुमानी

¹⁴तबरी जि/6, पेज/199

¹⁵तबरी जि/6, पेज/199

कर रहा था जिस के बाद फ़सादी अशखास को कुछ कहने का मौक़ा न था। इस लिए यहाँ से जाकर फ़ौरन अब्दुल्लाह बिन मुस्लिम ने ¹⁶यज़ीद के नाम ख़त लिखा कि मुस्लिम बिन अकील कूफे आये हैं और उनके तरफ़दारों ने उनके हाथ पर हुसैन^{अ0स0} की बैयत कर ली है। अगर आप को कूफ़ा अपने हाथ में रखना है तो यहाँ कोई मज़बूत आदमी भेजिये जो आपके फ़रमान के मुताबिक़ अमल कर सके। इस लिए कि नोमान बिन बशीर कमज़ोर शख्स हैं या वह जान बूझ कर कमज़ोरी दिखा रहे हैं।”

अम्मारा बिन अक़बा और अमर बिन सअद ने भी ऐसे ही मज़मून के खुतूत रवाना किये।¹⁷ इन खुतूत के पहुँचने पर यज़ीद ने सरजौन बिन मन्सूर रूमी से मशवरा लिया। यह शख्स ईसाई था जो मुआविया के ज़माने से मोहकम-ए-ख़िराज (Foreign ministry) में कातिब था।¹⁸

¹⁶देनवरी ने इस ख़त लिखने की निस्बत मुस्लिम बिन सईद हज़रमी और अम्मारा बिन अक़बा की तरफ़ दी है और कहा है कि यह दोनों यज़ीद बिन मुआविया

के जासूस थे। अख़बारुत तेवाल, पेज/233

¹⁷तबरी जि/6, पेज/199, इरशाद पेज/211-212

¹⁸अलविज़रा वल किताब पेज/15, चूँकि उस ज़माने में कूफ़ा व बसरा और दमिश्क़ दोनों मरकज़ों में मालियात के मुतअल्लिक़ दो दफ़तर थे, एक रिआया की मर्दुम शुमारी (Senses) का और उनके वज़ाएफ़ व इनआमात का, यहाँ काम अरबी में होता था और दूसरा आमदनी व ख़र्च के हिसाबात का। यह काम कूफ़ा व बसरा में अब तक फ़ारसी ज़बान में होता था और शाम में यह रूमी ज़बान में लिखा जाता था इस लिए इराक़ में यह दफ़तर मुजूसियों (यहूदियों) और शाम में ईसाईयों के हाथ में था। चुनौनचे उस दफ़तर का मोहतमिमे आला (इन्चार्ज) दमिश्क़ में सरजौन था जो मुआविया के वक़्त से अब्दुल मलिक बिन मरवान के अहेद तक बराबर इस शोबे का जिम्मेदार रहा और उस गुर्रे (डिपार्टमेन्ट) में कि यह काम (बकिया हाशिया पेज नं014,.....पर)

यज़ीद उस वक़्त तक इब्ने ज़ियाद से ख़फ़ा था क्योंकि उसका ख़याल था कि उसी की वजह से ज़ियाद ने मेरी वलीअहदी से इख़्तेलाफ़ किया था और यह कि शायद मुआविया के बजाए मेरे यह खुद ख़िलाफ़त का उम्मीदवार था इस लिए उसका अब तक यह इरादा था कि वह बसरा की हुकूमत से भी इब्ने ज़ियाद को माज़ूल कर देगा।¹⁹

चुनानचे इब्ने ज़ियाद का नाम सुनते ही यज़ीद ने इन्कार किया और कहा नहीं। वह ठीक नहीं है। किसी और का नाम लो। सरजौन ने कहा। यह बताइये कि अगर मुआविया इस वक़्त ज़िन्दा होते और वह इस वक़्त आप को यही राय देते तो आप कुबूल करते? यज़ीद ने कहा। बेशक उनके कहने को ज़रूर कुबूल करता। यह सुन कर सरजौन ने एक तहरीर निकाली और कहा कि यह मुआविया का फ़रमान है जिस में इब्ने ज़ियाद को कूफ़े का हाकिम मुकर्रर किया है। वह उसे भेजने न पाये कि इन्तेक़ाल हो गया।

(बकिया हाशिया पेज नं० 13.....का)

बग़ैर हमारे हो ही नहीं सकता ऐसा महसूस होने लगा कि वह ख़लीफ़ा तक को ख़ातिर में नहीं लाता। इसी वजह से अब्दुल मलिक के ज़माने में इराक़ और दमिश्क़ के इन दोनों दफ़तरों को भी अरबी में

मुन्तक़िल किया गया। चुनानचे 78 हिजरी में हज्जाज बिन यूसुफ़ ने इराक़ के दफ़तरों से मुजूसियों को निकाल कर उनको अरबी की तरफ़ मुन्तक़िल किया और तकरीबन उसी ज़माने में अब्दुल मलिक के हुक्म से दमिश्क़ के दफ़तर की ज़बान अरबी बनाई गई और सरजौन को ओहदे से बरतरफ़ कर दिया गया। (अलविज़रा वल किताब पेज/23-24) सरजौन ने अबैदुल्लाह बिन ज़ियाद का नाम लिया। सबसे पहले ज़ियाद के मरने के बाद सन 54 हिजरी में अबैदुल्लाह बिन ज़ियाद को मुआविया ने खुरासान का हाकिम करार दिया। उस वक़्त उसकी उम्र 25 बरस की थी। (तबरी जि/6, पेज/66) फिर सन 55 हिजरी में उसे बसरा का हाकिम करार दिया। पेज/168)

¹⁹तबरी जि/6, पेज/194

अब आप बसरा और कूफ़ा दोनों जगह की हुकूमत अबैदुल्लाह बिन ज़ियाद के लिए करार दे दीजिये।

यज़ीद ने मुआविया की इस तहरीर के मुताबिक़ इब्ने ज़ियाद के नाम ख़त लिखा कि मुझे मेरे शियों ने कूफ़े से खुतूत लिखे हैं कि वहाँ पिसरे अक़ील ने आ कर लशकर जमा करना शुरू कर दिया है ताकि मुसलमानों में तफ़रेका और फ़साद पैदा हो। तुम इस ख़त के पहुँचने के साथ ही उधर रवाना हो और मुस्लिम को कब्ज़े में ला कर कैद करो, क़त्ल करो या निकाल दो। वस्सलाम।²⁰ क़दीम मुअर्रिख़ (पुराने हिस्टोरियन) “जहशियारी” ने इस ख़त का मज़मून हस्बे ज़ैल लिखा है जिस के पस मन्ज़र में यज़ीद की इब्ने ज़ियाद से नाराज़गी को मलहूज़ (सामने) रखते हुए उस में तहदीदी (सख़्ती भरा) अन्दाज़ ज़्यादा नुमायाँ है।

“मालूम होना चाहिए कि जिस की एक वक़्त तारीफ़ें होती हैं वहीं दूसरे वक़्त सब्बो शत्म (बुरे अल्फ़ाज़) से याद किया जाता है और जिसे सब्बो शत्म से याद किया जाता है वही एक दम महल्ले तारीफ़ बन जाता है। इस वक़्त एक बड़ा मन्सब तुम्हारे सिपुर्द किया जा रहा है जिस से बढ़ कर तुम्हारे लिए कोई एज़ाज़ नहीं हो सकता और इत्तेफ़ाक़ से हुसैन^{अ०स०} की मुहिम तुम्हारे ही दौर और तुम्हारे ही क़लमरूवे (गवर्नरी) ममलिकत के नसीब में आई है और तमाम उम्माले हुकूमत (कार फ़रमाओं) में तुम ही वह हो जो उस महल्ले आजमाइश में पड़े हो। अब या तो तुम्हारी शराफ़त पाय—ए सुबूत तक पहुँच जायेगी और या जैसे कभी थे वैसे ही गुलाम के गुलाम करार पा जाओगे। वस्सलाम।²¹

²⁰इरशाद पेज/212, तबरी जि/6, पेज/200

²¹अल-वज़रा वल किताब पेज/19

इसके आखिरी फ़िकरे में तलमीह (सबक) वही ज़ियाद के मजहूलुन नसब(ना मालूम) होने और फिर मुआविया की नज़रे इनायत से फ़रज़न्दे अबू सुफ़ियान करार दिये जाने की तरफ़ है। इस ख़त के मज़मून से यह भी जाहिर है कि वह सिर्फ़ मुस्लिम ही के बारे में इब्ने ज़ियाद को सरगर्मी की तहरीक नहीं कर रहा है बल्कि सख़्त व दुरुशत (सख़्ती भरा) और ग़ैरत अंगेज़ अलफ़ाज़ में खुद हज़रत इमाम हुसैन^{अ०स०} के मुआमिले में इब्ने ज़ियाद को मज़बूत इक़दामात की तहरीक कर रहा है। जिस में ज़रा भी कोताही उसके सामने उसके तमाम मुस्त्विबल के तारीक बनाने की धमकियों का मरकज़ बना दी गई है।

बहरहाल इस ख़त को कूफ़े की हुकूमत के परवाने के साथ मुस्लिम बिन अम्र बाहली (कुतैबा बिन मुस्लिम की शख़सियत तारीख़ में मशहूर है। यह मुस्लिम बिन अम्र उसी का बाप था।²² के हाथ इब्ने ज़ियाद के पास रवाना किया जिसको देखते ही उसने बसरा में अपने भाई उसमान बिन ज़ियाद को कायम मक़ाम बना कर खुद कूफ़ा जाने की तैयारी कर दी और मस्जिदे जामे में एक तहदीद आमेज़ (धमकी भरे) तक्रीर करने के बाद जिसमें ऐलान किया था कि अगर तुम में से किसी ने ज़रा भी मुख़ालिफ़त की तो मैं उसी को नहीं बल्कि उसके वुरसा (ख़ानदान वाले) को भी क़त्ल करा दूँगा और आस पास के आदमियों और ख़ता कार के साथ बे ख़ता को भी सज़ा देने में कमी न करूँगा।²³

दूसरे दिन रवाना हो गया।²⁴ वह कोई और नहीं ज़ियाद बिन अबीह का बेटा और

²²अख़बारुत तुवाल, पेज/33

²³अख़बारुत तुवाल, पेज/234

²⁴तबरी जि/6, पेज/201, इरषाद पेज/212-213

मुआविया का उनके इदआ (दावा) के मुताबिक़ भतीजा था। और यह पूरा ख़ानदान ही वह था जिस पर हीला (मक्कारी) व फ़रेब का ख़ातिमा था। चुनौनचे सब से पहली बात इब्ने ज़ियाद ने यह की कि उसने अपनी नक़लो हरकत को बिल्कुल सीग-ए-राज़ में रखा ताकि उसका वरुद कूफ़े में अचानक हैसियत से हो और फिर जब कूफ़ा नज़दीक रह गया तो उसने अपनी वज़ा में तग़ैय्युर पैदा (लिबास बदल) कर के एक सियाह अम्मामा सर पर बाँधा और चेहरे पर उसी तरीक़े से जो अरब कौम के बहादुरों का जंग वग़ैरह के मौकों पर दस्तूर था एक ठाठा बाँध लिया जिसकी बिना पर शनाख़्त नामुमकिन हो गई। एक मर्तबा शहर पनाह कूफ़े के अन्दर यह नक़शा नज़र आया कि आगे आगे अरबी घोड़े पर सवार एक रईसे कौम पूरे वक़ार व तमकनत (जाहो जलाल) के साथ सियाह अम्मामा सर पर बाँधे जो अशराफ़े अरब का इम्तियाज़ी निशान था और उसके पीछे एक शानदार काफ़िला जीन व लजाम, साजो सामान से आरास्ता आ रहा है। इस हशम व ख़दम (शानो शौकत) को देख कर उन तवक्कुआत की बिना पर जो पहले से कायम थे वही होना चाहिए था जो हुआ। यानी हर शख़्स यही समझा कि हज़रत हुसैन बिन अली^{अ०स०} तशरीफ़ लाये हैं और इस कायम शुदा असर की बिना पर या मुतवक्क़े जदीद (मुमकिना नय) इन्क़ेलाब से नफ़ाए दुनियवी हासिल करने की तमन्ना में जिस जमाअत की तरफ़ से उबैदुल्लाह का गुज़र होता वह बनज़रे ताज़ीम खड़े हो कर आदाब बजा लाती और खुश आमदीद के मानी में यह अलफ़ाज़ ज़बान पर जारी करती। मरहबा यब्ना रसूलिल्लाह कददमत ख़ैरा मक़दमा इब्ने ज़ियाद किसी को कुछ जवाब न देता बल्कि आवाज़ों को सुनता,

चेहरों को बगौर देखता, शक्लो शुमाएल (सूरतों) को पहचानता चला जा रहा था। यहाँ तक कि मजमा ज़्यादा हो गया और लोग इशतियाक से घरों से निकल आये और हर शख्स फ़रज़न्दे रसूल^{स०अ०} समझ कर आगे बढ़ने लगा और नौबत यह पहुँची कि राह चलने में रुकावट पैदा होने लगी। उस वक़्त मुस्लिम बिन अम्र बाहली ने जो इब्ने ज़ियाद के साथ था पुकार कर कहा। “रास्ता छोड़ दो। यह अमीर उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद हैं।”²⁵

न मालूम इन अलफ़ाज़ में कौन सा असर था कि बढ़ते हुए क़दम और उठते हुए हाथ और मसरत आमेज़ तराने सब मौकूफ़ (ठहेर) हो गए। एक सन्नाटा था जो छा गया और सारा मजमा तितर बितर हो गया। यहाँ तक कि जब इब्ने ज़ियाद दारुल अमारा में पहुँचा तो दस आदमियों से ज़्यादा उसके साथ न थे।²⁶ इस मौक़े पर अहले कूफ़ा के फ़ित्री रूजहानात पर गौर करने के बाद उनके बातनी इज़तेराब का अन्दाज़ा करना चन्दाँ (कोई) दुश्वार नहीं। इस लिए कि हालात का गौर मुतवक्का सूरत से जुहूर पज़ीर (ज़ाहिर होना) होना बजाए खुद सन्सनी पैदा कर देता है चेजाएकि सूरते हाल यह हो कि उन में से हर एक ने अपने खिलाफ़ खुद जासूसी के काम को अन्जाम दिया यानी अपनी बातनी ख़यालात और हुसैन इब्ने अली^{अ०स०} के साथ खुलूस व अकीदत की खुद इब्ने ज़ियाद के सामने बवक्ते वुरुद (दाख़िल होते वक्ते) तरजुमानी कर दी और इब्ने ज़ियाद ने एक एक चेहरे और आवाज़ को पहचान लिया और फिर इब्ने ज़ियाद वही था जिस की और जिस के बाप की तलवार के नीचे बीस बरस तक इस तमाम ख़िलक़त

²⁵अख़बारुत तेवाल पेज/234, तबरी जि/6, पेज/201

²⁶तबरी जि/6, पेज/301

की गर्दन इस तरह ख़म रही हैं कि जिसको चाहा गिरफ़्तार किया, सूली पर लटकाया, जल्लाद के हाथ से सर को क़लम करा दिया और ऐसे हैबत नाक मनाज़िर उन ही हाथों से आँखों के सामने आ चुके हैं जिनको सोच कर अब तक रोंगटे खड़े हो जाते और दिल हिल जाते होंगे। और अब वही सूरतें अपने और अपनी औलाद और अइज़ज़ा व अकारिब के लिए पेशे नज़र हैं। क्या वह वजूह (सबब) ऐसे न थे जिनकी बिना पर दिल व दिमाग़ मुअत्तल (सुन), ताक़तें मुज़महिल और हिम्मतें पस्त हो जातीं और उन पर अज़ीम खौफ़ व हिरास का ग़लबा हो जाता खुसूसन जबकि ज़्यादा तर तादाद अवाम की थी जो वाक़ेआत व हालात को समझे बग़ैर हर नई आवाज़ पर लब्बैक कहने के शौक़ में शरीक हो गए थे।

(बकिया पेज नं०8.....का)

मुतावफ़्फ़ी 1950ई० ने भी एक तवील नज़्म में इमाम बाड़े में अपने तास्सुरात ज़ाहिर किए हैं।

हुसैनिय-ए-गुफ़रान मआब की

तौलियत:-लखनऊ की ताज़ा इत्तेलाआत से इसकी तसदीक़ हो गई है कि मौलाना सै० कल्बे आबिद साहब क़िबला जा नशीने उमदतुल उलमा को मरहूम की जगह शिया वक्फ़ बोर्ड यू० पी० ने इमाम बाड़ा गुफ़रान मआब का मुतवल्ली तसलीम कर लिया है।

(माखूज़ अज़ गुफ़रान मआब नंबर, माहनामा मुबल्लिग़ लखनऊ, रजब 1349हि०)

(नोट: सफ़वतुल उलमा हुज्जतुल इस्लाम वल मुस्लेमीन मौाना सै० कल्बे आबिद नक़वी रहमत मआब(मुतवफ़्फ़ी 13 दिसम्बर 1996ई० मुताबिक़ शंबा 10 रबीउस सानी 1407हि०)की रेहलत के बाद से कायदे मिल्लत मद ज़िल्लहुश शरीफ़ हुसैनिय-ए- हज़रत गुफ़रान मआब(र०) के मुतवल्ली हैं।)

मुख्य समाचार

अगर तेहरान में अमेरिकी सिफारत खाने पर कब्ज़ा न किया जाता तो इन्क़िलाबे इस्लामी 40 साल तक नहीं पहुँच सकता

अहलेबैत न्यूज़ एजेन्सी, अबना, की रिपोर्ट के मुताबिक़ इस्लामी जमहूरिया-ए-ईरान की सिपाहे पासदाराने इन्क़िलाबे इस्लामी के सरबराह मेजर जनरल मुहम्मद अली जाफ़री ने तेहरान में 13 आबान की मुनासिबत से अज़ीमुश्शान रैली से ख़िताब में अमेरिकी जासूस ख़ाने (सिफ़ारत ख़ाने) पर कब्ज़े की तरफ़ इशारा करते हुए कहा है, कि अगर तेहरान में अमेरिकी जासूस ख़ाने पर कब्ज़ा न किया जाता तो इन्क़िलाबे इस्लामी 40 साल तक नहीं पहुँच सकता था। रिपोर्ट के मुताबिक़ इस्लामी जमहूरिया-ए-ईरान के दारुल हुकूमत तेहरान समेत तमाम छोटे-बड़े शहरों, कस्बों और देहातों में आलमी साम्राज से मुकाबले के कौमी दिन की मुनासिबत से अज़ीमुश्शान रैलियों का एहतिमाम किया गया जिसमें ईरानी तुलबा, अवाम के मुख़्तलिफ़ तबकात और आला सिविल और फ़ौजी हुक्काम ने शिरकत की।

ईरान की फ़ज़ाएं एक बार फिर अमेरिका मुरदाबाद के नारों से गूँज गईं। तेहरान की मरकज़ी रैली अमेरिकी जासूसी अड्डे पर मुन्आकिद हुई। इस रैली से सिपाहे पासदाराने इन्क़िलाबे इस्लामी के सरबराह जनरल मुहम्मद अली जाफ़री ने ख़िताब में कहा कि, अगर तेहरान में अमेरिकी सिफ़ारत ख़ाना और जासूस ख़ाना बाकी रहता तो इन्क़िलाबे इस्लामी आज 40 साल तक नहीं पहुँच सकता था।

उन्होंने कहा कि हमारे बाज़ हुक्काम उस वक़्त भी इस अमल के ख़िलाफ़ थे, लेकिन रहबरे मुअज़्ज़म इन्क़िलाबे इस्लामी समेत बाज़ दीगर हुक्काम ने इस अमल की मुकम्मल हिमायत की।

उन्होंने कहा कि, इस दौर में आरज़ी लेबरल हुकूमत ने भी इन्क़िलाबे इस्लामी को मुन्हरिफ़ करने की बड़ी कोशिश की। 13 आबान दर हकीक़त अमेरिका की तारीख़ी शिकस्त और उसकी खोखली ताक़त के टूटने का दिन है।

जनरल जाफ़री ने कहा कि, 13 आबान के दिन को अज़रत इमाम खुमैनी रिज़वानुल्लाह तआला ने दूसरे इन्क़िलाब से ताबीर किया है। यह दिन दर हकीक़त इन्क़िलाबे इस्लामी की अमेरिकी तागूत पर फ़त्हा का दिन है। जनरल जाफ़री ने कहा कि अमेरिकी फ़ौज पर ईरानी फ़ौज का ख़ौफ़ो हिरास तारी है।

अमेरिकी फ़ौजी कमांडरों को ईरानी फ़ौज के साथ लड़ने की हिम्मत नहीं है। वह हमारी फ़ौज के पुख़्ता अज़्मो ईमान से ख़ौफ़ज़दा हैं। हमने बारहा अमेरिकी और बरतानवी फ़ौजियों को ख़लीजे फ़ारस में गिरफ़्तार करके आज़ाद किया है। हमने उनपर साबित कर दिया है कि, हम अपने मुल्क की किसी रेड लाईन को उबूर करने की किसी को इजाज़त नहीं देंगे।